ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष २७ | चैत्र सं० २०३३ वि० मार्च १९७७ | संख्या ६

दोहा

१—सुमिरन सुरत, लगाय कर, मुख से कछू न बोल ।
बाहिर का पट देयकर, अन्तर का पट खोल ॥१॥

२—माला फेरत मन खुशी, ताते कछू न होय ।
मन माला को फेरते, घट उजियारा होय ॥ २ ॥

३—माला फेरत युग भया, फिरा न मन का फेर ।
कर का मनिका डाल दे, तू मन का मनिका फेर ॥३॥

४—कबीर माला काठ की, बहुत जतन का फेर ।
मन माला को फेरिये, जा में गांठ न मेर ॥४॥

५—माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख मांह ।
मनुआँ तो दह दिस फिरै, यह तो सुमिरन नाँह ॥५॥

६—तन थिर मन थिर वचन थिर, सुरत निरत थिर होय ।
कहत कबीर इस पलक को, कल्प न पावे सोय ॥६॥

———

मानवता मन्दिर होशियारपुर १३-१४ १९७७

चढ़ी बैशाखी धुमां पैयां, घरीं सौदागर आये,
खुले केश गले विच मेरे सैयां शीस गुदाये।
कौन हदायत खबर ल्याबे केहड़ा कासिद जाये।
वतन दुराडा देश दुराडा पैया मैं लम्वेड राही,
साईं मैं तूं तोड पहुंचाईं।

अपने देश, धुर धाम अथवा अपने पिया से मिलने के इच्छुकों को सूचित किया जाता है कि गत बर्षों की तरह इस वर्ष भी १३-१४ अप्रैल १९७७ को मानवता मन्दिर होशियारपुर में वार्षिक सत्संग होगा जिसमें परम सन्त परम दयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज अपने ९० वर्षीय अनुभव के आधार पर अपने देश धुर घर व अपने पिया अथवा चिन्ता रहित अवस्था को प्राप्त करने की व्याख्या करेंगे, इसके अतिरिक्त संतमत के आचार्य हजूर पीरेमुगां साहिब (दिल्ली) हुजूर आनन्दराव जी (सिकन्द्राबाद) सन्त ताराचन्द जी (दिनोह) सन्त हरनामसिंह जी (मोगा) महात्मा ठाकुरदास जी (हिमाचल प्रदेश) और सनातन धर्म के नेता श्री वशिष्ट शर्मा (चण्डीगढ़) भी सम्मिलित होकर इसी विषय पर अपने अपने विश्वास के अनुसार अपने विचार प्रगट करेंगे।

१—सत्संग में भाग लेने वाले सज्जनों के लिये निवास व भोजन का प्रबन्ध फ़कीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट यथा योग्य करेगा।

२—बाहर से आने वाले भाई अपना बिस्तर साथ लायें।

३—क्योंकि यह कोई मेला नहीं इसलिये केवल अधिकारी और मुमुक्षु ही दर्शन दें।

यह सत्संग सेठ दुर्गादास साहिब की प्रधानता में होगा।

प्रोग्राम—बुधबार १३-४-७७ प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक
सायं ४ बजे से ६ बजे तक

वीरवार १४-४-७७ प्रातः ८ बजें से ११ बजे तक
सायं ४ ,, ६ बजे तक

निबेदक—सेक्रेटरी मानवता मन्दिर होशियारपुर।

राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अलीअहमद

श्रद्धान्जली

श्री फखरुद्दीन अली अहमद का दिनांक ११-२-७७ को प्रात: ८ बज कर ४२ मिनट पर हृदयगति रुक जाने के कारण देहान्त होगया। भारतवर्ष ने एक सच्चा रत्न खो दिया जिसकी पूर्ती होना असम्भव है। वे सच्चे देश भक्त, कर्तव्य परायण तथा दूरदर्शी थे। उनके कार्यकाल में देश ने अद्भुत उन्नति की थी और समृद्धी की ओर अग्रसर था। उनके इस कठिन समय में निधन से देश को काफी आघात पहुंचा है।

परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ती प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस क्षति को वहन करने की क्षमता प्रदान करें।

प्रभूदयाल मीतल

सम्पादक

धन्यवाद

बसन्त पंचमी के अवसर पर दक्षिण भारत, महाराष्ट्र तथा उत्तर प्रदेश से जो 'मनुष्य बनो' का शुल्क प्राप्त हुआ है इसके लिये हम सभी पाठकों के आभारी हैं दाता दयाल की शिक्षा को प्रचार करने हेतु उन्होंने हमें सहयोग दिया है वार्षिक शुल्क के अतिरिक्त जिन्होंने विशेष अनुदान भी दिया है हम उनके कृतज्ञ हैं।

भवदीय

सुधा मीतल

व्यवस्थापक

सूचना

ग्राहकों से निबेदन है कि वे पत्र व्यवहार हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में ही किया करें। उर्दू भाषा का हमें ज्ञान नहीं है। अतः हम उर्दू भाषा में पत्र व्यवहार करने में असमर्थ हैं। एवं न हम उर्दू में आये पत्रों का जवाब दे सकते हैं।

व्यवस्थापक

निवेदन

'मनुष्य बनो' का नव वर्ष प्रारम्भ हुये ६ टवां माह समाप्त हो रहा है। मगर अभी तक बहुत से भाइयों का पिछले वर्षों का चन्दा प्राप्त नहीं हुआ है अतः उन सभी भाइयों से निवेदन हैं कि वे शीघ्र ही बकाया चन्दा भेजने की कृपा करें।

व्यवस्थापक

निवेदन

चन्दा भेजने वाले भाइयों से निवेदन है कि वह कूपन पर नीचे अपना नाम पता एवं ग्राहक नम्बर अवश्य लिखा करें ग्राहक नम्बर न होने से रकम इन्दराज में गलती होने की सम्भावना रहती है। साथ ही मनीआर्डर व्यवस्थापक के नाम से ही भेजें।

सुधा मीतल
व्यवस्थापक

परमदयाल पं० फ़क़ीरचन्द जी महाराज का १५-२-७७ को स्वर्गीय श्री देवीचरन मीतल जी के निवास स्थान लेखराजनगर, अलीगढ़ में

सतसंग

मुझे अलीगढ़ आना नहीं था मगर देवीचरन के देहान्त के पश्चात संसारिक व्यवहार के कारण आना जरूरी था। इस दुनिया से मामचन्द, मुन्शीलाल, गोपीलाल··· सभी चले गये। जन्म में भी दुख है, मरण में भी दुख है। जीवन में अनेक रोग होते हैं संसार के हर प्राणी को दुख होते हैं।

"सब हैं जाने बाले जग में जग में रहने वाला कोई नहीं"

इस संसार में सुख व दुख दोनों ही भोगने पड़ते हैं। सर्वाधार, अनाम, अकाल या परम तत्व यहां नहीं रहता है वह न तो इन्द्रलोक, न ब्रह्मलोक और न ही शिवलोक में हैं। न पृथ्वी पर हैं और न आकाश में हैं। मैं बचपन में दातादयाल के चरणों में चला गया। ब्राह्मण होने के नाते मैंने उस मालिक को दातादयाल के रूप में पूजा की। दातादयाल ने मुझे यह काम दिया क्या काम निबल, अबल, अज्ञानी जीवों को भवसागर के पार ले जाने का।

देवीचरन बीमारी की हालत में मेरी फोटो को देखता था और अन्त समय में मेरी फोटो को ही देखते-देखते शरीर त्याग दिया है अब चूँकि वह मेरा ध्यान करते ही शरीर को छोड़ गया है तो आवागमन के कारण उसको इस दुनिया में फिर जन्म लेना पड़ेगा।

आजकल विज्ञान का युग है। मगर वह लोग रूह को नहीं मानते हैं। जब मनुष्य मरता है तो कोई चीज उसके अन्दर से निकलती है जिससे उसका वजन कम हो जाता है। उस सूक्ष्म शरीर की फोटो भी ली गई। जो चीज हमारे शरीर से निकलती है वह

कुछ न कुछ वजनदार होती है। Newton की थ्योरी के मुताविक पृथ्वी हर चीज को अपनी ओर खींचती है जिस कारण वह उस वस्तु को शरीर से बाहर निकलने से रोकती है इसलिये जो चीज हमारे शरीर से निकलती है वह ऊपर नहीं जा सकती है। इसी तरह अन्त समय में मनु य की जैसी भावना होगी जैसा लगाव होगा उसी के कारण उसका शरीर भी भारी होगा। जिस भावना को लेकर शरीर का अन्त होगा उसी के कारण उसको दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। यह है आवागमन का रहस्य। अगर आवागमन से बचना चाहते हो तो किसी से ममता, मोह, लगाव मत रखो तभी इस बन्धन से बच सकते हो। इसका एक ही मार्ग है कि किसी सतगुरु का सतसंग करना पड़ेगा। यह मार्ग कौन अपना सकता है जो विषयों से परे हो। विषयों में लगे रहने से उसका उद्धार नहीं हो सकता है। जिज्ञासु ही नाम का अधिकारी होता है यदि तुम हर समय विषय विकार, छल कपट, आदि की बातें सोचते रहोगे तो तुम्हारे अन्दर में वैसी ही धारायें निकलेगी और तुम्हारे सम्पर्क में आने वालों पर भी वैसा ही प्रभाव पड़ेगा जो व्यक्ति मानसिक व शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करता है संयम नहीं बरतता है उसको कभी शारीरिक सुख व मानसिक शान्ती नहीं मिल सकती है यह बिल्कुल स्पष्ट बात है।

जहां काम वहाँ नाम नहीं, जहां नाम नहिं काम।
रवि रजनी दोऊ न मिलें, एक ठौर एक याम॥

सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का। सच्चा ज्ञान और सच्ची बुद्धि देने को मेरे सतगुरु दातादयाल ने मुझे गुरु पदवी दी थी मैं आप सतसंगियों को अपना गुरू मानता हूं। दातादयाल ने मुझको यह काम सौंपा था कि फकीर चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना उसी सच्चे ज्ञान को देने के लिये मैं सतसंग कराता हूं। कोई आदमी सहसदल कवल में अभ्यास करता है कोई त्रिकुटी में, कोई

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

भंवर गुफा में, कोई सतलोक में। यह सभी श्रेणिया हमारे अन्त केन्द्रित हैं। जिसका जैसा अभ्यास है वह उस स्थान के पद का [illegible] जब से यह ज्ञान हुआ कि लोगों के अन्तर में, मेरा रूप प्रगट होता है किसी के पर्चे हल करता है, किसी की दवा देता है [illegible] रक्षा [illegible] है, किसी के मुकद्दमे में मदद करता है किसी को बच्चे का प्रसाद देता है। कहीं अफ्रीका में और अमरीका में लोगों को दर्शन देता है। चूँकि मैं नहीं होता हूँ तो मुझको यह स्पष्ट हो गया कि हर व्यक्ति का अपना ही विश्वास, अपना ही ख्याल अपनी ही आत्मा से यह सब होता है। अगर मैं इस भेद को खोलकर सतसंगियों को न बताता और दूसरे गुरुओं की तरह भोले भाले लोगों से पैसा ऐंठता तो मैं भी लखपति होकर अपना डेरा, धाम, गद्दी बनाकर मौज से रहता। अब चूँकि मैं सच्ची बात लोगों को कह देता हूँ इस कारण मुझे पैसा कौन देगा। मुझे अपने लिये किसी का पैसा नहीं चाहिये। हाँ यह मन्दिर अस्पताल है जिसने परमार्थ के लिये कोई चन्दा देना है वह मदद के रूप में बेशक दे इसमें मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं है मेरी नीयत बिल्कुल साफ है। अगर कोई देता है तो उसका फल उसको अवश्य मिलता है। जो जिस भाव से देता है वैसा ही उसको मिलता है। मुझे अपने शरीर व निजी आवश्यकता के लिये किसी से कुछ नहीं लेना है।

जिस तरह हम हाथ हिलाकर वायुमंडल में कम्पन पैदा करते हैं और वह कम्पन चलती रहती है जब तक कि वह उसी स्थान पर आकर शान्त न हो जाय जहां से शुरू हुई है। इसी प्रकार हमारे विचारों की धारा भी रेडीयेशन के सिद्धान्त के अनुसार अपना असर करती है इसलिये जैसे भी विचार व ख्याल हमारे मन में अंकुरित होंगे उनका असर हम पर अवश्य पड़ेगा यह नितान्त सत्य है। इसीलिये मैं कहता हूं कि अपने ख्यालात को विचारों को शुद्ध रखो वर्ना इनसे बच नहीं सकते हो। जैसा ख्याल वैसा हाल।

माताओं से मैं कहूंगा कि वह घर में शान्ति बनाये रखने के लिये अपने लिये अपने विचारों को शुद्ध रखें। जिसके साथ रहने से दूसरे को शान्ती नहीं मिलती है तो अपनी कहनी में जरूर कोई कमी है मेरे सतसंग को सुनकर लोगों को शान्ती नहीं मिलती है तो मेरे जीवन में जरूर कमी है मुझे नहीं मालूम अगर मैं गलत कहता हूँ तो कोई भी सन्त मेरे कथन का काट कर सकता है। मैं किसी को धोखे में रखना नहीं चाहता हूं। मेरी बात कोई सुनना चाहता है सुने या न सुने तुम्हारी मर्जी।

सब ही जाये सतगुरु आगे,
दरस न पकड़ा बचन न लागे।
कहो अस सतसंग से क्या फल पाया,
वक्त दिया और जन्म गँवाया।

मैं आप लोगों को सच्ची बुद्धी देता हूं, सच्चा ज्ञान देता हूं तुम्हारा घरेलू जीवन सुख व शान्ती से व्यतीत हो जाय। जो बोया हुआ है वह तो काटना पड़ेगा। आजकल गुरुमत एक भेड़ चाल है। जब तक गुरु शिष्य में प्रेम नहीं है। दोनों के मन आपस में मिले हुये नहीं हैं तब तक एक का प्रभाव दूसरे में नहीं जा सकता है। गुरुमत तो अनादि काल से चला आ रहा है। अपने आप को किसी सच्चे सतगुरु के साथ जोड़ दो। इसको कहते हैं पेबन्द लगाना।

शिष्य को ऐसा चाहिये, गुरु को सब कुछ देय।
गुरु को ऐसा चाहिये, शिष्य का कुछ भी न लेय।

अन्त में सबको मेरा राधास्वामी। अब शिवरात्रि के अव आपको कल सतसंग कराऊँगा।

संकलन कर्त्ता
सम्पादक—प्रभूदयाल मीतल

परमदयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज का १६-२-७१ अलीगढ़ में शिवरात्री के भंडारे पर मेजर सोमदत्त गोयल सुपुत्र श्री चक्खन लाल के गोदाम पर

सतसंग

आज़ दातादयाल का जन्म दिन है। अलीगढ़ वालों ने भंडारे के लिये मुझे यहां बुलाया है। मैं तुम सबको वह तत्व बताये देता है, जो मैंने अपने जीवन में अनुभव किया है। मेरे रहस्य को वही समझ सकते हैं जो मालिक से साक्षात्कार के लिये जिज्ञासु हैं। हजारों लाखों सतसंग होते हैं। बड़े-बड़े महापुरुष व्याख्यान देते हैं। मैंने रहस्य को समझने की बहुत चेष्टा की है। मेरी स्त्री मुझको देखकर दुखी होती थी कि मैंने यह क्या हालत बनाली है। क्या आनन्द मिलता है। वह कहती थी कि मैं ग्रहस्थ धर्म का पालन करती हूं दिन रात आप लोगों की सेवा करती हूं और रात को सो जाती हूं दुनिया को भुला देती हूं। तुम्हारे और मेरे में क्या अन्तर है। मैं सोचता हूँ कि मनुष्य को शान्ती मिलती है। शान्ती सिर्फ आपको अपने अन्तर ही में मिलेगी वह भी सिर्फ उस समय जब तुम्हारा मन निर्मल होगा।

जब तुम अभ्यास करने लगते हो तो संसार के अनेक रूप तुम्हारे सामने से गुजरते हैं जब तक इस प्रकार की धारायें तुम्हारे मन में आती रहेगी तो तुमको शान्ती कहाँ मिलेगी। शान्ती के मालिक का रूप बनाना होगा जब तक मनुष्य अपने गुरु या इष्ट को गैर समझता रहेगा उसे किसी भी हालत में उसका दीदार नहीं हो सकता।

दातादयाल ने मेरे अज्ञान को भ्रम को मिटाने के लिये मुझे गुरु की पदवी दी थी और आगाह किया था कि राधास्वामी दयाल मुझे सतसंगियों के रूप में मिलेंगे। अब चूँकि मैं किसी के अन्दर नहीं

जाता मगर मेरा रूप सतसंगियों में प्रकट होकर उनकी मनोकामना पूरी करता है इससे मुझे ज्ञान हो गया।

मैं तुमको संदेश लाया हूं कि तुम्हारा मालिक तुम्हारे ही अन्दर २४ घन्टे रहता है। जब तुमको यह विश्वास हो जायेगा तो तुम्हारे लोक व परलोक दोनों ही बन जायेंगे।

ढूढ़ मुझको अपने मन में, मैं तो तेरे पास हूं।
मैं न काशी में न मथुरा में, मैं न गिरि कैलाश हूँ।

तुमको जो भी मिलना है अपने ही विश्वास, अपने ही ख्याल से मिलना है मेरे वचनों पर मनन करोगे तो तुमको भटकने की जरूरत नहीं है। आप लोग सतसंग के लिये यहां आये हैं मैं आप लोगों को आशीर्वाद देता हूं। सुखी रहो, मन में शान्ती हो, सच्चा ज्ञान मिले।

जीवन गुजारने के दो मार्ग हैं (१) प्रवृति मार्ग (२) निवृति मार्ग निवृति मार्ग की शिक्षा बच्चों को नहीं दी जाती है। इस मार्ग में एक मालिक का विश्वास रखो। प्रवृति मार्ग में यदि कामयाबी चाहते हो तो बढ़ो और फैलो। सन्तों ने जीवन के तीन मार्ग बताये हैं। कर्म, ज्ञान और भक्ति। संसार में हर एक को कर्म करना पड़ता है। अच्छा कर्म करोगे अच्छा फल मिलेगा। कर्म के फल से कोई बचे या नहीं। मन का काम संकल्प उठाना हैं। अगर संकल्प अच्छे हैं; भलाई के लिये हैं, उन्नति के लिये हैं, कल्याणकारी हैं तो फल अच्छा होगा वर्ना जैसा बोओगे वैसा काटोगे। इसीलिये तो संत बताते हैं चौथा पद निज स्वरूप से मिली है। मन की धार जुवान से लगी है। धार न आये तो मैं बोल भी नहीं सकता। उसकी शक्ति आत्मा से आती है और आत्मा को शक्ति निज स्वरूप से मिलती है। इसीलिये आप लोग निज स्वरूप में रहो वहीं शान्ती मिलेगी जीवन सुख चैन से गुजरेगा।

अपना जीवन अपने निज रूप से पैदा किया जाय उससे कोई

अलग नहीं है। उसको अलग मानना भ्रम व अज्ञान है। हम जीवन उसी की गति पर निर्भर है इसी लिये सन्तों ने कहा है—

आप आप को आप पहचानों।
कहा किसी का नेक न मानो॥

दुख नाम है कमी का। धन, सन्तान, विद्या आदि की कमी है। कमी महसूस करते हो। धनवान भी कमी महसूस करता है। क्योंकि तुम कमी के मंडल में रहते हो। अपना रिश्ता पूर्ण के मंडल से जोड़ो। निज स्वरूप ही पूर्णता का मंडल है वहाँ कोई भी कमी नहीं है। इन्द्रियों को वश में रखो इनके अधीन न बनो। तभी तुम पूर्णता के मंडल में पहुंच सकोगे।

योग के अभ्यास में सबके चक्र हैं। मन जिस जिस चक्र में रहता है वही काम करने लगता है। जैसे ख्याल या विचार होते हैं वैसे ही दृश्य सामने आते रहते हैं। जैसा प्रकाश या शब्द पैदा करना चाहता है वैसी हालत पैदा कर लेता है। मन कभी चंचल होता है कभी शान्त। मनुष्य की तीनों अवस्थायें बदलती रहती है। चौथी अवस्था निज स्वरूप की होती है जब मन आत्मा के वश में होता है या आत्मा के मंडल में होता है तब वासना स्वयं ही खो जाती है। आत्मा में वासना नहीं होती है। जो लोग शान्ती चाहते हैं और यह भी चाहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह न हो यह तो भ्रम है। बिना काम व क्रोध के जीवन का अस्तित्व ही नहीं है मगर इनको काबू में रखना चाहिये। गुरु की शिक्षा यह है पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पांच ज्ञानेन्द्रियां ओर अन्तःकरण को काबू में रखने से मनुष्य को अहंकार नहीं होता है। गुरु की संगत से; उसकी रेडियेशन से, बचनों से उस अवस्था को प्राप्त कर सकते हो।

गुरु नाम है ज्ञान का, समझ का, विवेक का। संसार में जीवन व्यतीत करने के लिये तथा उसको पार करने का मार्ग बताता है। शरीर को ठीक रखना चाहते हो तो रक्त की गति को ठीक रखो।

दिमाग को ठीक रखना चाहते हो तो अपने संकल्प को टीक रखो। सतगुरु की शरण में जाने से वह तुम को रहस्य बता देगा। जब मनुष्य गुरु के बताये मार्ग को चुन लेता है तो उसका दिमाग आनन्दमय, शान्तिमय व सुखमय हो जाता है। मुझे यह विश्वास हो गया कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता मगर मेरा रूप अभ्यासियों के अन्दर प्रगट होता है। यह रहस्य मैंने सतसंगियों को खोलकर बता दिया। अमल करना, नाम जपना यह आपका काम है मेरा नहीं। हाँ गुरु के संस्कार मिलने से, सतसंग से, श्रवण, मनन और निदिध्यासन से मनुष्य को अपने घट का ख्याल मिलता रहता है। इसीलिये सतसंग का महत्व है।

—सम्पादक

सुमिरन का फल

१—तार सुमिरन का बँधा जब, समझो तब तर जाओगे।
जीते जी सुमिरन भजन और, ध्यान का फल पाओगे ॥१॥

२—तार सुमिरन का न टूटे, नाम की जब लव लगी।
वह तरेगा तारेगा लाखों को, अपने जीते जी ॥२॥

३—तार सुमिरन का न टूटे, तार को रक्खो सँभाल।
अन्त में है मुक्त पद, हो जाओगे इससे निहाल ॥३॥

४—तार सुमिरन का न टूटा, नाम की तारी लगी।
शब्द धुन की गूंज मन को, मीठी और प्यारी लगी ॥४॥

५—तार सुमिरन का न टूटे, सुमिरो साँसों साँस तुम।
राधास्वामी की दया से, करलो पूरी आस तुम ॥५॥

सतसंग की महिमा

विश्वामित्र और वशिष्ट विपरीत स्वभाव के मनुष्य थे। विश्वामित्र कहते थे, "पुरुषार्थ सब कुछ है।" वशिष्ठ का कथन था, "सतसङ्ग की महिमा अपार है।" दोनों में वाद विवाद होने लगा दोनों ही अपने अपने पक्ष को दृढ़ करने लगे परन्तु कोई बात निश्चित न हो सकी। बात बढ़ती ही गई। तब यह सम्मति हुई कि किसी तीसरे के पास चलकर इस झगड़े को मेटना चाहिये। दोनों ही मान गये और सचाई की खोज में घूमते फिरते कैलाश पर्वत पर शिवजी के पास प चे। उन्होंने दोनों का पक्ष सुना। कहने लगे, ब्रह्मा चार वेदों के जानने वाले हैं। वही इस झगड़े को निबटायेंगे।" यह दोनों ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा ने उत्तर दिया, "मैं कुछ निर्णय नहीं कर सकता। तुम विष्णु भगवान के पास जाओ।" वहां से यह लोग विष्णु के स्थान पर जिज्ञासू बनकर पहुंचे। विष्णु इनकी बातों को सुनकर मुस्कराये, "इसका उचित निर्णय शेषनाग कर सकेंगे।" जब इन्होंने शेष जी से प्रश्न किया, वह बोले, 'मेरे सर पर सारे ब्रह्माण्ड का बोझ है। मैं दबा हुआ हूं। तुम में से प्रत्येक मनुष्य बारी बारी से अपने पुरुषार्थ और सतसङ्ग के प्रताप का बल लेकर इसे उठा लें। तब मैं तुम्हारा झगड़ा मेट दूँगा।" पहिले विश्वामित्र की बारी आई उन्होंने कहा, "मुझको जो कुछ पुरुषार्थ का फल प्राप्त हुआ हो उसके सहारे मैं ब्रह्माण्ड को अपने सर पर लेता हूँ।" अभी शेषनाग ने इनके सर पर बोझ रक्खा ही था कि वह चिल्लाने लगे, "मुझ में ब्रह्माण्ड के उठाने की शक्ति नहीं है।" तब वशिष्ट बोले, "सतसङ्ग का फल जो कुछ मुझको मिला है मैं इसके हजारवे अंश के बल से इस ब्रह्माण्ड को ले लूँगा।" इन्होंने ब्रह्मान्ड उठा लिया। उसी समय शेषनाग ने विश्वामित्र जी से कहा 'देखा! यह सतसङ्ग पुरुषार्थ से बड़ा है। ऐ विश्वामित्र! तुम अपने आपको ज्ञानी कहते हो परन्तु तुम को अब तक सार वस्तु की समझ नहीं है। ऐ अज्ञानी

मनुष्य ! पुरुषार्थ में दो बातें हैं—'पुरुष' और 'अर्थ'। जहां द्वैतभाव होगा वहां सच्चा बल नहीं आता। जो अपने को पुरुषार्थी समझते हैं उनमें मेरा और तेरा नाम बना रहता है और यह अवल और निबल करने वाली समझ है परन्तु "सतसंग" का अर्थ है 'सत् का सङ्ग'। आत्मा सत् है। इसमें स्थित हो जाता है उसे फिर कुछ करना धरना नहीं रहता। इसमें सारी शक्ति विद्यमान रहती है और वह अहंकार से बचकर ईश्वर, ब्रह्म और प्रकृति सबको अपना कर लेता है। यहाँ तक कि वह इनको अपने से पृथक नहीं समझता। उसके बल का क्या ठिकाना है ? जो सब में है, जो सबसे है, जिससे कोई वस्तु पृथक नहीं है उसको अपने और पराये का भ्रम नहीं होता क्योंकि जगत में केवल यही एक ऐसा विचार है जो निबलता की ओर ले जाता है। इसलिये तू भली भांति समझ ले कि वह पुरुषार्थ जिसमें अहंभाव और अहंकार है वह अधूरा है। तू सतसंग का माँझा देकर अपने हृदय के वेदन को दूर करदे। जहां तुझको सतसंग प्राप्त हुआ फिर तू भी वशिष्ठ जीं के समान ब्रह्मान्ड के भार को उटा सकेगा और तुझे कुछ भी कष्ट न होगा क्योंकि दुख की जड़ मेरे और तेरे पने में है।" विश्वामित्र जी मन में बहुत लज्जित हुये।

—×—

शब्द

१—आके सतसङ्ग में ले, अपने जनम को तू बना।
त्याग दुर्मति दुर्गती, द्वचिताई और दुब्धापना ॥१॥
२—खाना दिन को रात को, सो रहना तेरा काम है।
है पशू योनी में पशु ज्यों, कर रहा है कल्पना ॥२॥
३—देह नर की पाके, क्या करने लगा है भूलकर।
अन्त में सहना पड़ेगा, यम के हाथों ताड़ना ॥३॥

४—जैसी आसा तैसी वासा, जैसी मति वैसी गती।
सुन गुरू के बचन, सुन तज झूटे जग की वासना ॥४॥
५—शब्द का अभ्यास कर, अनुभव का जीवन प्राप्त कर।
राधास्वामी की दया से, कुछ दिनों कर साधना ॥५॥

सतसंग के लाभ

ऊपर जो कुछ कहा गया है वह एक कथा है परन्तु इस कथा में सच्चाई है। वास्तव में सतसंग हीं सब कुछ है। जिनको सतसंग मिल जाता है फिर न उनको योग करने की आवश्यकता है न तप करने की। न इन्हें ज्ञान के ग्रन्थों से लाभ पहुंचता है न तीर्थ व्रत ही कुछ उपयोगी हो सकते हैं। सतसंग का जो फल है वह अनन्त और अपार है।

जो मनुष्य आग के पास जाता है उसको गर्मी मिलती है। जो पानी के सन्निकट जाता है उसे ठंडक मिलती है। बाग के समीप जाने से सुगन्धि और सड़ांध के निकट जाने से दुर्गन्धि मिलती है इसी प्रकार जो सतसंग में रहता है बिना परिश्रम उसमें नित्य नित्य किन्तु क्षण क्षण नये नये सद्भाव उत्पन्न होते हैं और वह सहज में आत्मिक आहार पाकर आत्मिक दृष्टि से मोटा और बलवान हो जाता है। सतसंग से बढ़कर मनुष्य को सुधारने वाली ओर कोई वस्तु नहीं है।

शब्द

कर सतसंग असनान तीरथ राज यही (टेक)
१—गंगा भक्ति यमुना कर्म्म धारा सरस्वती ज्ञान वही।
न्हाय धोय सूरत भई निर्मल, चिन्ता चित न रही ॥१॥
२—ईड़ा पिंगला नील रंग छबि, सुषमन स्वेत कही।
केसर तिलक भाल दे न्यारा, प्रेम का रूप लही ॥२॥

३—सहस कमल दल मार ले आसन, ओम का मन्त्र गही ।
सुन्न समाधि अखन्ड रचा ले, ध्यान का सार सही ॥३॥
४—भँवर गुफा चढ़ जीत काल को, माया मोह दही ।
सतपुर अलख अगम राधास्वामी धुर पद धाम वही ॥४॥
५—ऐसा तीरथ मिले भाग से यम की फाड़ बही ।
राधास्वामी मौज निरख घट अन्तर, छाछ त्याग ले मही ॥५॥

सतसंग का महत्व

पारस से मिलकर लोहा शुद्ध सोना बन जाता है । गन्दे नदी नाले गंगा से मिलने पर गंगा के समान शुद्ध और पवित्र हो जाते हैं । खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है । गुलदस्ते के साथ बँधी हुई घास भी शोभा देती है । चन्दन के समीप यदि नीम और बबूल के वृक्ष भी हों तो इनसे भी चन्दन की सुगन्ध आने लगती है । इसी प्रकार जिनको मौज, मालिक की दया, और सन्तों के प्रताप से सतसंग का धन प्राप्त हो जाता है वह सहज में तर जाते हैं । साधु के क्षण मात्र के सतसंग से वाल्मीक ऋषि हो गये । भक्तों के प्रसाद से नारद देवऋषि कहलाये । गणिका रामानन्द जी के सतसंग से भक्तिनी बन गई । सदन ने कसाई के उद्यम को छोड़ दिया । नाभा जी चूढ़े थे । सन्तों के सतसंग से भक्तिकाल के ग्रन्थकार तुलसीदास जी ने जो बड़े कामीं थे नरहरि जी की सेवा से यह पदवी पाई कि अपने साथ करोड़ों को तार दिया और अब भी तार रहे हैं ऐ प्राणी ! यदि तू भी सतसंग करेगा तो तेरा बेड़ा पार हो जायगा ।

शब्द

सतसंगत में अमृत बरसे ! सत संगत (टेक)
१—मूरख जन कोई मर्म न जाने, यों ही तृष्णा से तरसे । सत्
२—ज्ञानी पिये सुधारस नामा, सतगुरु चरन कमल परसे । सत्
३—सार वस्तु भेद लख पावे, तत्व विवेक का गुरु दरसे । सत्
४—शठ सुधरहिं सतसंगत पाई सहजहिसहज काल सरसे । सत्
५—राधास्वामी चरन पकड़ मेरे प्यारे ! छोड़ न यह सिधि निधि करसे ।

प्रवचन

परमदयाल पं० फकीर चन्द जी महाराज होशियारपुर

सुनरी सखी तोहि भेद बताऊँ। प्रथम स्थान खोल कर गाऊँ ॥
सहस कँवल दल नाम सुनाऊँ। जोति निरंजन बास लखाऊँ ॥
करता तीन लोक यह ठाऊँ। वेद चार इन रचे जनाऊँ ॥
ब्रह्मा विष्णु महादेव तीनों। सुत इन्हीं के हैं यह चीन्हों ॥
कुल वैराट रचा इन मिलके। जीवन घेर लिया इन पिलके ॥
जाल बिछाया जग में भारी। इनकी पूजा जीव सम्हारी ॥
फँसे जाल में पचे कर्म में। धोखा खाया पड़े भरम में ॥
अब जो इनको कोई समझावे। सत्त पुरुष का भेद लखावे ॥
तो नहिं मानें झगड़ा ठान। पक्षपात कर ढिग नहिं आवें ॥
या ते मैं तो को समझाऊँ। यह सब ठग खुल कर जतलाऊँ ॥
इनके मारग तू मत जाय। तू संतन की शरन समाय ॥
सतगुरु कहें सोई तुम मानो। इनका बचन न कर परमानो ॥
राह रकाना देऊँ दरसाई। पता भेद अब कहूँ जनाई ॥
मन और सुरत जमाओ तिल पर। घेर घुमर घट जाओ पिल कर ॥
निरखो खिड़की देखो चौका। चित्त लगाओ राखो रोका ॥
पचरंगी फुलवारी रखो। दीपदान घट भीतर परखो ॥
कोई दिन ऐसी लीला देखो। नील चक्रता आगे देखो ॥
विरह प्रेम बल ताको फोड़ो। जोत निहारो मन को मोड़ो ॥
अनहद घंटा सुन सुन रीझो। शंख बजाओ रस में भीजो ॥
यह पहला अस्थान बताया। राधास्वामी वरन सुनाया ॥

अपना बचपन याद आता है। जब मैं बच्चा था तो उस परमात्मा को मिलने के लिये प्रार्थना किया करता और बेहोश हो जाया करता था। चित्त में यह विचार बैठा हुआ था कि मन्दिर में, मसजिद में, तीर्थों में हर जगह भगवान है। जब स्कूल में पढ़ा

करता था तो मेरी यह दशा थी कि हरी घास पर टट्टी नहीं बैठता था। ख्याल था कि इसमें जान है और मेरी टट्टी से यह दुखी होगी। मैं सिपाही का लड़का हूँ, मेरे पिताजी ने एक बकरी रखी हुई थी। एक वार उन्होंने मुझसे कहा कि वकरी के लिये कीकर (बबूल) की फलियां तोड़ लाओ। मैं जब फलियां तोड़ने लगा तो उनमें दूध जैसा सफेद रंग का पानी निकलने लगा। मुझे खयाल आया कि यह वृक्ष का खून है। मैं रोने लगा। पिता ने समझा कि कहीं काँटा लग गया होगा। वह दौड़ते हुये मेरे पास आये और कहने लगे कि क्या हुआ। मैंने कहा कि मैं फली नहीं तोड़ूँगा। पूछा क्यों? मैंने कहा इसमें जान है। तो उन्होंने मुझे मारा। वह समय भी गया। स्कूल से निकला। पिताजी आगे पढ़ा नहीं सकते थे। सर्विस में आ गया। बुरी संगत में पड़ गया। कई बार मांस खाया। तीन बार शराब पीई। एक बार वैश्या के पास गया। सन् १९०४ ई० में कांगड़ा में भूचाल वाली रात को अपने कुकर्म के कारण मैं बहुत दुखी हुआ। ख्याल आया कि मैं तो बचपन से भगवान से मिलना चाहता था और अब किधर चला गया। हिन्दू हूँ। ब्राह्मण हूं। बड़े भाई पं० रामनरायन रामायण आदि पढ़ा करते थे। वहाँ से ख्याल मिला कि भगवान अवतार लिया करते हैं।

नाना भांति राम अवतारा।
रामायण शत कोटि अपारा॥

फिर यह उन्मत्तापना आ गया कि भगवान को मानव रूप में देखूँ। एक दृश्य था जिसके द्वारा मैं दातादयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में प च गया। उनको राम समझके पूजता था। उन्होंने मेरे बिचार बड़ी युक्ति से बदला और गुरुमत में लगाया नाम दान दिया। 'सारबचन पद्य' और कबीर शब्दावली पढ़ने को दी। इनको पढ़ा तो दिमाग में कुछ और ही बिचार पैदा हुआ। चूँकि इस राधास्वामी मत में खंडन था जैसा कि ऊपर के शब्द में

कहते हैं कि प्रथम स्थान जोति स्वरूप का है। इसके मार्ग चलना, यह ठग है और सन्तों की तुम जुगत कमाना। अब ऐ भारत के धार्मिक जगत के लोगो ! जो व्यक्ति बचपन से उस भगवान को मानता है उसके लिये ऐसी वाणी को सुनना कितना कठिन काम है। उस समय मेंने प्रण किया था कि इस रास्ते पर सच्चा होकर चलूँगा और जो कुछ मुझे मिलेगा वह संसार को बता जाऊँगा आज कहे जाता हूं कि भगवान या असली जो मालिक है वह सच-मुच जोति स्वरूप नहीं है। क्यों कहता हूं ? क्योंकि जो जोति स्वरूप है यह एक हमारे अन्तर हैं और एक हमारे बाहर है। जो जोति स्वरूप है वह प्रकाश है और यह प्रकाश उत्पत्ति करता है। वर्तमान विज्ञान भी यही सिद्ध करता है।

इंगलैंड के डा० पाल ब्रिटेन ने एक पुस्तक है Inner Reality (अन्तरीय सचाई) लिखी है। उन्होंने इस पुस्तक में एक दूसरी पुस्तक जिसका नाम Rana Science of Physice का उल्लेख है। उसके पृष्ट ३०१ पर डा० कर्ल के Research physicist लिखते हैं कि जोति के अन्दर अणु होते हैं। अणु किसी वस्तु के छोटे अंश को कहते हैं। अणु का नाम उन्होंने Proton रक्खा हैं। वह लिखते हैं कि प्रोटोनस से इलैक्ट्रोन्स (Electrones) निकलते हैं। वह इलैक्ट्रोन्स होते हैं निगेटिव (Negative) और प्रोटोन्स हैं पोजीटिव। प्रोटोन में यह शक्ति है कि वह ग्रोसमैटर (जड़ या स्थूल पदार्थ) को बनाती है। और इलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स मिलकर स्थूल पदार्थ को बनाते हैं। और वह अणु कासमिक किरणों (Cosmic Rays) से शक्ति लेते हैं। उसने यह सिद्ध किया कि स्थूल सृष्टि की जितनी रचना है यह प्रकाश से होती है। प्रकाश के अन्दर जो प्रोटोन है वह इलैक्ट्रोन बनकर और फिर प्रोटोन से मिलकर जड़ पदार्थ को पैदा करता है और वही इस स्थूल जगत को बनाते हैं। वही जड़ पदार्थ फिर बदलकर प्रकाश Light हो जाता है तो इस

संसार की उत्पत्ति प्रकाश से होती है। अब तुम सोचो कि जो व्यक्ति इस प्रकाश (ज्योति) को ज्योति स्वरूप को, चन्द्रमा को मानते हैं और उसकी पूजा करते हैं वह इस संसार के चक्र से कैसे निकल सकते हैं। जो आदमी ज्योति स्वरूप को ईश्वर या खुदा मानकर उसके ही ध्यान में मग्न रहता है वह इस साइंस के सिद्धान्त के अनुसार इस शरीर में आने और फिर ज्योति स्वरूप बनने से कैसे बच सकता है। तुमने ज्योति स्वरूप का ध्यान किया। वह तुम्हारे सामने है। घंटा बजता है तो होगा क्या ? तुम्हारा जीवन हमेशा इस शरीर को धारण करता रहेगा। शरीर को छोड़कर कभी ज्योति (लाइट बनेगा और फिर शरीर बनेगा। यह वैज्ञानिकों की वर्तमान रिसर्च है जिसके अनुसार मैं कह रहा हूं। वह कहते हैं कि इस दुनिया की उत्पत्ति प्रकाश (लाइट) से होती है। उस प्रकाश में से इलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स प्रकाश के हर एक अणु से निकलते रहते हैं। प्रकाश इतना बड़ा है कि इनमें करोड़ों और अरबों अणु होंगे और हर एक अणु से इलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स निकलते रहते हैं। वह इस सृष्टि को बनाते हैं और बनाते रहते हैं। जब समय आता है तो वही वस्तु प्रलय में आकर फिर प्रकाश (लाइट) बनती रहती है। साइंस के सिद्धान्त के अनुसार मैं यह मानने के लिये विवश हूं कि जो जोति स्वरूप का ध्यान करता है और उसी को ईश्वर या खुदा मानता है वह इस चक्र से निकल नहीं सकता है। यह चक्र क्या है ? यह रचना है। शरीर का धारण करना और फिर ज्योति स्वरूप हो जाना और फिर वही चक्र। इसलिये मैं विवश हूं वर्तमान विज्ञान के अनुसार संतों के मार्ग को सच्चा सिद्ध करने के लिये। स्वामी जी कहते हैं :-

सुनरी सखी तोहि भेद बताऊँ।
प्रथम स्थान खोल कर गाऊँ॥

सखी सहचरी या साथी को कहते हैं। जो हमेशा को दुख सुखों

से बचना चाहता है उसको सखी शब्द से सम्बोधन करके कहा है। दुख सुखों से कौन बचना चाहता है ? वह जिसको इस दुनियां का अनुभव हो गया है। तुम देखते हो कि करोड़ों कीड़े उत्पन्न होते हैं और एक कीड़ा दूसरे को खाता है। बड़ी मछली छोटी को खाती है। किसी की टांग कटती है किसी का सिर कटता है। कितने ही रोग दुनियां में आते हैं और लोग उनमें पीड़ित होते हैं और मरते खपते हैं। तो जिनको समझ आ जाती है कि इस संसार में कुछ नहीं है और जिनको अनित्य सुख की खोज है जहां जन्म मरण दुख सुख कुछ नहीं है, उसको कहते हैं कि ऐ सखी ! यदि तू दुख सुखों से बचना चाहती है तो सुन। मैं तुझको भेद बतादूँ।

देखो ! यह कोई नहीं सोचता है कि जब बच्चा पैदा होता है तो स्त्री को कितना कष्ट होता है। यदि घर का एक मर जाता है तो पीछे रहे लोगों को कितना दुख होता है। तो यह संसार है। यह सारा खेल जोति स्वरूप का है। ज्योति स्वरूप को ईश्वर या खुदा मानकर ध्यान करने वाले इस जन्म मरण के चक्र से बच नहीं सकते जैसा मैंने पहिले कहा है। धार्मिक पक्षपात एक और बात है और सत्यता या असलियत एक और बात हैं। श्री कृष्ण ने अर्जुन को ज्योति स्वरूप ही का दर्शन तो कराया था जिसको कहते हैं कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को विराट रूप दिखाया था। अर्जुन ने उस विराट रूप में देखा कि यह कौरव पहिले ही से ही मरे हुए हैं। यह जो विराट पुरुष है ज्योति स्वरूप है। यह कर्ता पुरुष है क्योंकि यह रचना करता है। स्वामीजी आगे कहते हैं—

सहस कंवल दल नाम सुनाऊँ।
जोति निरंजन वास लखाऊँ॥

सहस कँवल दल – हजारों पंखड़ियों वाला। वह जो प्रकाश है अणु है जिनमें से एलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स उत्पन्न होते हैं जैसा कि साइंस सिद्ध करती हैं और वह एलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स वह स्थूल

पदार्थ (Gross matter) को पैदा करते हैं। सन्तों के मार्ग में जो वस्तु ज्योति स्वरूप में रहती हुई जोति को देखती है और उसकी साक्षी है वह इस दुनियां में फँसी हुई है। तो जब तक कोई जोति स्वरूप का ध्यान करता रहेगा वह आवागमन के चक्र से नहीं निकल सकता। क्योंकि उसका तो काम ही यह है कि वह रचना करता रहता है और फिर प्रलय होती रहती है।

कर्ता तीन लोक यह ठाऊँ।
वेद चार इन रचे जनाऊँ॥

वह त्रिलोकी का कर्ता है। देह, मन और आत्मा, त्रिगुणात्मक जगत का वह पैदा करने वाला है। मैं स्वामीजी की बात को सत्य मानने को विवश हूँ क्योंकि वर्तमान विज्ञान ने भी इस बात को सिद्ध कर दिया है। डा० पाल ब्रिन्टन ने अपनी पुस्तक Inner Reality) में लिखा है कि मैंने ज्योति (Light) के अणुओं को अलग करके इनसे पदार्थ (matter) पैदा किया है। वह लिखता है कि मेरा अनुभव यह सिद्ध करता है कि इन्हीं अणुओं से स्थूल पदार्थ बनता है उसने छोटे रूप में अनुभव किया है मगर उस ज्योति स्वरूप में तो करोड़ों और अरबों अणु मौजूद हैं। वह सब इस दुनिया को रचते हैं।

ब्रह्मा विष्णु महादेव तीनों।
पुत्र इन्हीं के हैं यह चीन्हों॥

एलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स में यह शक्ति है कि वह स्थूल पदार्थ को बना देते हैं। फिर वह तोड़ देते हैं। पहिले वह स्थूल पदार्थ बनता है। कुछ देर तक कायम रहता है फिर टूट जाता है। यह तीन शक्तियां हैं जो उस जोतिस्वरूप से निकलती हैं। जिसको जोति (Light) कहते हैं वह तुम्हारे अन्तर भी है और बाहर भी है। जोतिस्वरूप का एक बड़ा भारी लोक है जिसमें जोति जलती है।

कुल वैराट रचा इन मिलके।
जीवन घेर लिया इन पिलके॥

उसने रचना तो रचदी। जीव जन्तु, स्थूल शरीर बन गय। अब सब जीव इसके घेरे में आये हुए हैं। जन्मते हैं और मरते हैं। कहीं भूचाल आगया, कहीं बाढ़ आगई। कितने ही आदमी मर गये। तो जो कुछ यहां हो रहा है जीवन, मरण, बुरा, भला, यह है क्या ? यह सब ज्योति स्वरूप का खेल है जिसने यह सृष्टि रच कर हम सबको इसमें जकड़ दिया है। हम जन्मते हैं मरते हैं हाय हाय करते हैं। छुटकारे की कोई राह नहीं। एक जन्म लिया, दूसरा लिया, तीसरा लिया यह क्रम चलता ही रहता है। कितने ही दुखी मेरे पास आते हैं। कोई पंगा है। कोई कहता है मेरा दिमाग ठीक नहीं। यह है क्या ? इस ज्योति स्वरूप ने सबको घेर लिया हुआ है।

जाल बिछाया जग में भारी।
इनकी पूजा जीव सम्भारी॥

स्वामीजी कहते हैं कि जाल इतना बड़ा बिछा हुआ है कि जीव बिचारे दुखी हैं। इस ज्योतिस्वरूप ने सबको वश में किया हुआ है। जो इस ज्योतिस्वरूप को ईश्वर मानता है उसकी पूजा करता है वह इस चक्र से कभी नही निकल सकता। उसका जन्म मरण दुख सुख कभी समाप्त नहीं हो सकता। मैं अपने आपसे पूछता हूं कि तू संतमत का पक्ष तो नहीं करता। उत्तर है नहीं। मैं वर्तमान विज्ञान को लेता हूं। वर्तमान साइंस की रिसर्च यह सिद्ध करती है कि प्रकाश से इलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स निकलते हैं और वह इस स्थूल जगत को बनाते हैं। तो जब तक किसी का इष्ट ज्योतिस्वरूप होगा वह इस चक्र से नहीं निकल सकता। यह साधारण समझ की बात है।

फँसे जाल में पचे करम में ।
धोखा खाया पड़े भरम में ।।

जो व्यक्ति उस ज्योतिस्वरूप को भगवान समझकर इसलिये मानता है कि मैं इस संसार से निकल जाऊँगा वह भ्रम में है अज्ञान में है। जब कभी मैं प्रेम में आकर गाया करता था कि वह मेरा मालिक है तो दातादयाल जी मुझे इशारों इशारों में समझाया करते थे मगर उन्होंने मेरे दिल को नहीं तोड़ा कि मैं गलती पर हूं यह तो मन के विचारों की पूजा है या ब्रह्मा विष्णु और महेश की पूजा है। विचार में रहना, विचार में आकर परमात्मा की प्रार्थना करना या मन के विचार से रोना या प्रार्थना करना या निकलने की इच्छा करना या किसी से सहायता की इच्छा करना यह ब्रह्मा, विष्णु महेश तो सहायता कर देते हैं मगर जब तक वह अपने मन से प्रार्थना करता रहेगा वह निकलेगा नहीं। वह तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश जो इलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स जो शक्तियाँ बनती हैं वह तो उनका सहारा लिये हुये हैं। जब इनसे ऊँचा जायेगा तो ज्योति को पकड़ लेगा। इन प्रार्थना करने से तुमको आनन्द मिलेगा, धन मिलेगा अथवा दुनिया की और वस्तुयें मिल जायेंगी मगर इस प्रार्थना करने से तुम संसार के चक्र से नहीं निकल सकते। ट्रस्ट वालो ! यदि कभी समय मिले तो मेरे विचारों को प्रकाशित करवा देना ताकि जो सचमुच इस चक्र से निकलना चाहते हैं उसको सीधा रास्ता मिल जाय।

भगवान के या खुदा के आगे प्रार्थना करने से तुमको आनन्द मिलेगा दुनियां की दूसरी वस्तुओं की तुम्हारी मनोकामनायें पूरी हो जायेंगी। इसलिये हमारे हिन्दू ऋषियों ने संसार की मनोकामना पूरी करने के लिये गायत्री मंत्र में तुमको सावित्री का ध्यान बताया ताकि तुम्हारी सांसारिक वस्तुयें तुमको मिल जाँय और तुम सुखी रहो। जब सावित्री या प्रकाश तुम्हारे अन्दर आ जायगा अर्थात्

जोति स्वरूप आ जायगा, तो तुमको दुनिया की सफलता हो स
है मगर तुम इस चक्र से निकल नहीं सकते। मैं सन्तमत या स
जी की हाँ में हाँ नहीं मिला रहा किन्तु साइन्स की रिसर्च ने हमारे
दिमाग खोल दिये हैं। जो साइंस की रिसर्च सिद्ध करती है वही
संत मत कहता है इनकी वर्णन शैली और है तथा स्वामी जी की
वर्णन शैली और है तथा स्वामी जी की वर्णन शैली पर तो कोई
विश्वास नहीं कर सकता सिवाय उनके जो उनके विश्वासी हैं मगर
साइंस पर सब विश्वास करने को विवश हैं। अब जो ज्योतिस्वरूप
का ध्यान करते हैं या प्रार्थना करते हैं वह अपने घर नहीं जा
सकते। प्रार्थना किससे ? अपने मन से या अपने विचार से।

अब जो कोई इनको समझावे।
सत्त पुरुष का भेद लखावे॥

वह लोक या स्थान जहां जाकर फिर कोई वापिस नहीं आता
उसको सत लोक कहते हैं। मैं यहां पांचों स्थानों (Stages) की
व्याख्या करूँगा। आज पहले स्थान का वर्णन किया है। जहां
जाकर हमको फिर वापिस नहीं आना है वह अजर अमर देश है।
वह सत पुरुष हैं।

यह नहिं मानें झगड़ा ठानें।
पक्षपात कर ढिग नहिं आवें॥

स्वामी जी कहते हैं कि यदि मैं सच्ची बात कहता हूं तो लोग
झगड़ा करते हैं और पक्षपात में आकर मेरे पास नहीं आते। मेरे
पास भी कम लोग आते हैं। क्यों ? क्योंकि ज्योतिस्वरूप ने लोगों
को ऐसा जकड़ रक्खा है कि वह निकल नहीं सकते और न वह
निकलने ही देता है।

या ते मैं तो को समझाऊँ।
यह सब ठग खुल कर जतलाऊँ॥

ठग उसको कहते हैं जो किसी को ठग लेता है। हमारी सुरत

सतलोक से आई हुई है। उसको जोति स्वरूप ने या उसकी शक्ति ने वश में किया हुआ है। ठग लिया हुआ है। सुरत को इतना घेर रक्खा है कि वह निकल नहीं सकती। तुम अपने जीवन को देखो, कौन निकल सकता है।

इनके मारग तू मत जाय।
तू संतन की शरण समाय॥

स्वामी जी कहते हैं कि तुम जोतिस्वरूप को इ ट पद मत समझो यह तो रास्ते की इस रचना के क्रम में एक सीढ़ी है। यह एक श्रेणी या स्थान है। तुम सन्तों की शरण में जाओ। शरण में जाने का यह अभिप्राय नहीं कि तुम साष्टांग दन्डवत करते रहो तथा रुपया देते रहो। अभिप्राय यह है कि उनके सतसंग में जाओ। जो वह वचन कहें उनको सुनो और समझो और अपने अन्तर गुनो। फिर अपनी सुरत को इन पाँच श्रेणियों से निकाल कर ऊपर ले जाओ। पहली श्रेणी या स्थान जोतिस्वरूप का है जिसका यह वर्णन है।

सतगुरु कहें सोई तुम मानो।
उनका वचन न कर परमानो॥

सतगुरु के बचन को मानने वाले बहुत कम लोग हैं। यदि कोई आदमी संतों के पास जाता भी है तो यह चाहता है कि उसके पुत्र हो जाय, उसका घर बन जाय। सतसंग के लिये सन्तों के पास कोई नहीं जाता। संतों का बचन तो यह है कि अपने अन्तर चलो ताकि हमेशा के लिये तुम्हारा आवागवन का चक्र समाप्त हो जाय। संतों के वचनों का जो प्रमाण था वह मैंने साइंस के सहारे सिद्ध कर दिया कि संत जो कहते हैं वह बिल्कुल सत्य है।

राह रकाना देऊँ दरसाई।
पता भेद अब कहूँ जताई॥

वह कहते हैं कि तुम्हारा घर जहां तुमने जाना है वह पाँच स्थान से ऊपर है। उन स्थानों का मैं तुमको भेद या गुरु बता देता हूँ।

यही बाहर के गुरु की महिमा है। या यों समझलो कि उस रेडीयेशन काम करती है जिस तरह संसार में बिजली की रेडियेशन है। यह तार बिजली के भी और दूसरे भी लगे हुए हैं। जब यह तार गाढ़ते हैं तो इनमें छः इंच की दूरी होती हैं, क्योंकि जिस तार से बिजली जाती है वह बिजली से भरा (Electrified) हो जाता है और उसके इर्द गिर्द बिजली का चक्कर रहता है। यदि कोई दूसरा तार उससे छः इंच के अन्तर आजाय तो एक ही बिजली निकल कर दूसरे तार में आ जाती है। उसको अंग्रेजी में इंडक्शन (Induction) कहते हैं। एक तार से जो बिजली जाती है उसके छः इंच तक उसकी रेडीयेशन आगे पीछे फिरती रहती है। तार कोई और होता है और सरकट कोई और बोलता है। वह केवल बोलता है क्योंकि (Induce) हो जाता है। इसी प्रकार संतों के पास जाने से उनकी सत्यता, निर्बन्धता, निष्कपटता या अपने घर में रहने की जो रेडीयेशन है वह उसी तरह से जीव में प्रभाव करती है जिस तरह कि एक तार, जिसमें से बिजली चल रही है दूसरे तार पर प्रभाव कर जाती है। चूंकि वह अधिक शक्तिशाली होती है इसलिये वह कमजोर तार पर प्रभाव कर जाती है। इसी तरह संतों के सतसंग में जाने से उनकी रेडियेशन जीव के अन्तर (Induce) हो जाती है और उसकी शान्ति, बेफिक्री, बेगमी, निर्भ्रान्ति या संशय रहित होने का जो रेडीयेशन है वह उस जीव को मिल जाता है।

मन और सुरत जमाओ तिल पर।
घेर घुमर घट आओ पिलकर ।।

वह कहते हैं कि उस स्थान को पार करने के लिये या जोति स्वरूप से आगे जाने के लिये, इस विराट पुरुष से आगे जाने के लिये या स्थूल प्रकृति से आगे जाने के लिये क्या करना है। यह जो दोनों भौंओं के बीच और दोनों आंखों से थोड़ा ऊपर स्थान है उसको

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

तीसरा तिल कहते हैं। इस स्थान पर अपने मन को इकट्ठा करो, चूँकि यह इकट्ठा होता नहीं है इसलिये इसको अजपा जाप या सुमिरन दिया जाता है ताकि मन एकाग्र हो जाय। यह अजपा जाप जो दिया जाता है, कहा तो शास्त्रों ने भी ऐसा ही है कि तुमको विराट पुरुष से आगे जाने के लिये गायत्री मंत्र है मगर हम पंडित लोग न तो अपने अन्तर इस जोति स्वरूप में प्रवेश होते हैं और इससे पार जाते हैं। इस गायत्री मंत्र को केवल रटना ही जानते हैं। ऐसे ही राधास्वामी मत वाले राधास्वामी राधास्वामी मन के जाल का ही साधन करते हैं या पांच नाम की रट लगाते हैं। कोई अल्लाहू अल्लाहू करता है या कुछ और करता है। तो स्वामी जी कहते हैं कि मन को घेरकर इसे तिल पर लाओ। तिल किसको कहते हैं? मन को इकट्ठा करने के लिये एक स्थान है। उस स्थान पर मन को इकट्ठा किया जाता है।

निरखो खिड़की देखो चौका।
चित्त लगाओ राखो रोका ।।

उस स्थान पर तुम्हारा मन इकट्ठा हो जायगा तो तुम्हारी चित्त बृति एक जगह हो जायगी और जो विचार उठते थे वह नहीं उठेंगे मन ठहर जायगा। उस ठहराव का नाम है चौका। चौका घर में देते हैं। तो एक स्थान को साफ कर देते हैं। फिर कोई दूसरी वस्तु चौके में नहीं आती इसका अभिप्राय यह है कि तुम्हारा मन जब इकट्ठा होने लगे तो उसमें और कोई विचार न उठे। मन के अन्तर जो तरंगें उठती रहतीं है उनका ही चौका है। फिर उस चौके से आगे उस प्रकाश की ओर जाओ जो जोति स्वरूप है। उस स्थान से तुम उस प्रकाश में जाओगे। चौके से बाहर निकलकर उसका नाम है खिड़की। प्राय: कहा करते हैं कि खिड़की खोल दे हवा आ जाय। अथवा बाहर निकल जाओ। वह जो तुम्हारा मन है पहले उसका चौका लगता है। फिर उसके अन्दर संकल्प विकल्प नहीं उठते।

फिर आगे जोति के देखने का स्थान आ जाता है।

पचरंगी फुलवारी निरखो।
दीन दान घट भीतर परखो॥

इससे आगे है पचरंगी फुलवारीं। वह क्या है ? जो इलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स पैदा होते हैं वह तरह तरह की रचना करते हैं। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश यह सब स्थूल प्रकृति है। इन तत्वों के हर एक के अलग अलग रूप हैं। उनके रंगों का नाम पचरंग फुलवारी है। मिट्टी का रंग पीला होता है। जल का रंग नीला होता है। अग्नि का रंग सफेद होता है। ऐसे ही इन तत्वों के रंग हैं। जब मनुष्य उस स्थान पर जाता है तो उसके अन्तर पांच रंग की फुलवारी होती है, मगर वह कहते हैं कि इसमें फँसो नहीं। आगे जोति को देखो। दीपक जलता है। उस जोति के दर्शन करो। वह है ज्योति स्वरूप। यह तो तुम्हारे अन्तर का जोति स्वरूप है। एक बाहर का ज्योति स्वरूप है। उसके भी इलैक्ट्रोन्स हैं और तुम्हारे अन्तर के जोति स्वरूप के भी इलैक्ट्रोन्स हैं। तुम्हारे अन्तर जो ज्योति स्वरूप है उसमें भी इलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स निकल रहते हैं जिससे तुम्हारा शरीर बनता है। यदि दिमाग में तनक भी फितूर या खराबी आजाय तो उसका प्रभाव दिमाग के सैल्स (Cells) पर होता है कि कहीं लकवा हो जाता है और कहीं टांग नहीं चलती है। इसलिये जोति स्वरूप के दर्शन करो।

कोई दिन ऐसी लीला देखो।
नील चक्रता आगे पेखो॥

कुछ दिन वहां ठहर कर जोति स्वरूप के दर्शन करो। यहाँ नीले रंग का प्रकाश भी होता है।

बिरह प्रम वल ताको फोड़ो।
जोति निहारो मन को मोड़ो॥

वहां तो तब जाओगे जब तुमको अपने घर जाने की आवश्यकता होगी। किसी गुरू के आगे परमात्मा के आगे रोने से तुम उस घर नहीं पहुंच सकते। यह रोना धोना और प्रार्थना करना, मत्था टेकना निबलता की निशानी है मगर इससे भी एक प्रकार का सहारा मिलता है। लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि बाबा जी ! हमको वहाँ पहुंचा दो। यह सब जीव अबल निबल और अज्ञानी हैं। यदि इस तरह मत्था टेकने से या प्रार्थना करने से किसी को कुछ मिल जाता तो दुनिया तर जाती। इस प्रार्थना से तो तुम्हारे मन को शान्ति मिलेगी। तुमको ब्रह्मा, विष्णु और महेश की शक्ति से थोड़ा सा आनन्द मिलेगा मगर भवसागर से पार नहीं जा सकते मैं यहाँ धन इकट्ठा करने को नहीं आया। मैं आया हूं इस दुनिया में अपने घर जाने के लिये।

यह रामसेवक ग्वालियर से दौड़ा हुआ आया है। तुम केवल इसी बात से मुझे गुरु मानते हो ना कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर प्रगट हुआ जब तुम मुझे जानते भी न थे। मैं तो तुम्हारे अन्तर गया नहीं। यह सब विराट पुरुष का खेल है। रेडीयेशन और इन्डक्शन का खेल है। हर एक आदमी की रेडीयेशन इस संसार में रहती है जैसे मैंने आपको तार का उदाहरण दिया था। तो सतपुरुषों की रेडीयेशन दूर तक जाती हैं। वह ब्रह्माण्ड में रहती है। जहां जिसको जिस वस्तु की आवश्यकता होती है तो वह रेडीयेशन बनाकर जाती है। मैं नहीं जाता हूँ। यह जो रेडीयेशन है यह माँग और-पूर्ति (Demand and Supply) का सबाल है। जहाँ जिस प्रकार की मांग होती है वहाँ उसी प्रकार की रेडियेशन उसके अन्तर उसका काम करती है। जो दस नम्बर के बदमाश होते हैं या ठग होते हैं वह जब ठगी करना चाहते हैं तो बड़े बड़े ठग चोर डाकू हो गये हैं उनकी रेडीयेशन जो ब्रह्माण्ड में मौजूद है, वह उनके अन्तर दाखिल होकर उनको ठगी में कुशल बना देती है। जो ज्ञान

मैं देता हूं उसकी तो कोई कदर नहीं करता, दुनिया तो अज्ञान फँसी हुई है।

गुरु से ज्ञान जो पाइये, शीश दक्षिणा दे।

वह शीश है अपने अहंकार को तोड़ना। इस प्रकार साधन करके फिर आगे जोतिस्वरूप के दर्शन करो।

अनहद घंटा सुन सुन रीझो।
शंख बजाओ रस में भीगो॥

वह अनहद घंटा कैसे बजेगा? घंटा कैसे बजता है? उस जोति स्वरूप में स्थूल पदार्थ (माद्दा) पैदा करने के अणु मौजूद हैं। जिस तरह हम बाहर में घंटा बजाते हैं, बाहर की स्थूल धातुओं को इकट्ठा करके और जब उस पर हथोड़ा चलाते हैं तब घंटा बजता है इसी तरह जब तुम्हारी सुरत अन्तर में उस जोतिस्वरूप के ऊपर जायेगी, चूंकि जोति स्वरूप के अणुओं में स्थूल पदार्थ पैदा करने की शक्ति है जब वह इकट्ठी हो जायगी तो वहां पर वैसे ही घंटा बजेगा जैसे तुम बाहर की स्थूल धातुओं को इकट्ठा करके घंटा बजाते हो। यह है पहला स्थान। जब कुछ दिन इसका साधन हो जाय तो फिर आगे चलने की कोशिश करो। जब एक बार आदमी इस श्रेणी को पार कर जायगा एक बार घंटा शंख की आवाज सुनकर आगे चला गया तो फिर बार बार सुनने की आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि सुरत को इससे निकलने की स्वाभाविक आदत पड़ जाती है। जैसे एक सुरंग से तुम निकलना चाहते हो तो पहले तुमको पता नहीं होगा और कष्ट होगा। जब एक बार बाहर निकल गया तो फिर कोई कष्ट नहीं होगा।

यह पहिला स्थान बताया।
राधास्वामी वरन सुनाया॥

हमको अपने घर पहुंचना है। अपने घर और उस घर पहुंचने

के लिये रास्ते में मंजिलें हैं। आगे दूसरे स्थान या मंजिल का वर्णन होगा।

———०———

शब्द स्थान दूसरा

अब चलो सजनी दूसर धाम। निरखा त्रिकुटी गुरु का ठाम॥
ओंकार धुन जहँ विसराम। गरजे बादल और घनश्याम॥
सूरज मंडल लाल मुकाम। गुरु ने बताया गुरु का नाम॥
पंचम वेद नाद यहि गाया। चहुं दल कंवल संत बतलाया॥
घंटा शंख तजी धुनि दोई। गरज मृदंग सुनाई सोई॥
सुरत चली और खोला द्वार। बंकनाल धस हो गई पार॥
ऊँची नीची घाटी उतरी। तिलकी की उलटी फेरी पुतरी॥
गढ़ भीतर जाय कीन्हा राज। भक्ति भाव का पाया साज॥
करम बीज अब दिया जलाई। आगे को फिर सुरत बढ़ाई॥
नौबत झड़ती आठों जाम। सूरत पाया मूल कलाम॥
महाकाल और कुरम बखाना। उत्पत्ति बीजा यहां से जाना॥
सूरज चांद अनेकन देखे। तारा मंडल बहु विधि पेखे॥
पिंड अंड से न्यारी खोली। ब्रह्मण्ड पार चली अलबेली॥
बन और परबत बाग दिखाई। चमन-चमन फुलवारी छाई॥
नहरें नदियां निर्मल धारा। समुन्दर पुल चढ़ हो गई पारा॥
मेर सुमेर देख कैलाशा। गई सुरत जहँ विमल विलासा॥
राधास्वामी कहत पुकारी। दूसर मंजिल करली पारी॥

जब मैं सन् १९०५ में संत मत में आया था तो यह वाणियां पढ़ा करता था। मन में एक लगन थी। इन श्रेणियों से गुजरना चाहता था। अब ८३ बर्ष का हो गया हूं। जो कुछ इन श्रेणियों

को मैंने समझा, पता नहीं वह ठीक है गलत। यदि स्वामी अपनी वाणी रचने का अधिकार था जिससे हम लोग पढ़ पढ़ पागल बन गये तो मैं जो इन वाणियों को पढ़कर पागल बना हूं, मुझे भी अधिकार है कि अपना अनुभव कह जाऊँ।

कल मैंने साइंस की रिसर्च के आधार पर कहा था कि इस विराट पुरुष की उत्पत्ति प्रकाश से होती है क्योंकि प्रकाश के हर एक अणु में एलैक्ट्रोन्स होते हैं और जब वह प्रोटोन्स से मिलते हैं तो यह स्थूल पदार्थ बनता है मगर वर्तमान विज्ञान यह सिद्ध करता है कि प्रकाश (Cosmic Rays) से होकर आता है। यह पता नहीं कि यह कौसमिक रेज विज्ञानिकों ने कैसे देखे हैं। यह कौसमिक रेज क्या है? एक तो बाहर में और एक हमारे अन्तर में हमारी वासना है। सूक्ष्म प्रकृति का या मन का रूप है। उसके अन्तर आस है सूक्ष्म प्रकृति से यह प्रकाश और प्रोटोन्स और एलैक्ट्रोन्स निकलते हैं। जब मैं यह कहता हूं तो अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तेरे पास क्या प्रमाण है? साइंस ने यह सिद्ध किया कि इलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स जड़ या स्थूल पदार्थों को बनाते हैं। जब देवास के रहने वाले लड़के ने अपनी आस से मुझको पैदा करके परीक्षा हाल में मेरे रूप को मेज के नीचे बैठा कर उससे अपना साइंस का पर्चा हल करवाया मगर मैं नहीं था अथवा किसी ने नदी में डूबते हुये मेरा ख्याल किया और मेरे रूप ने उसे बचा लिया और मैं नहीं था तो इससे मुझे यह सिद्ध हुआ कि जिस तरह कौसमिक किरणों से प्रकाश निकलकर इलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स बनते हैं तो हमारे अन्तर में जो कौसमिक किरणें हैं वह हमारी आस है। यह दूसरी बात है कि जब मेरा रूप प्रगट हुआ तो दूसरे लड़कों ने उसे नहीं देखा मगर उस लड़के की आस प्रबल हुई होती तो वह दूसरों को भी मेरा रूप दिखा सकता था। इसलिये मैं त्रिकुटी के स्थान को साइंस के सिद्धान्त के अनुसार कौसमिक किरणों का भंडार या आस का भंडार

समझता हूं। सूक्ष्म प्रकृति में जो वासना है हिन्दू शास्त्र इसको अव्याकृत कहते हैं। यह बात योग बशिष्ट में लिखी है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश संकल्प की दुनिया से पैदा होते हैं अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, महेश संकल्प की सृष्टि के हैं और नीचे आकर ग्रास मेटर में विराट पुरुष में स्थूल रूप पृथ्वी है, पहाड़ हैं और पार्वती पृथ्वी के अन्तर उपजाऊ शक्ति है। तो दूसरे स्थान पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश सूक्ष्म प्रकृति रखते हैं और यही स्वामी जी कहते हैं :—

अब चलो सजनी दूसर धाम।
निरखो त्रिकुटी गुरु का ठाम॥

गुरु का धाम क्या है? तुम्हारे मन कौ जो शक्ति है, आस है, वासना है वासना का जो मैटर (पदार्थ) है वह दूसरे स्थान पर रहता है तुम्हारे अन्तर भी और बाहर भी जिस तरह कि देवास के रहने वाले उस लड़के ने अपने मन के अन्तर से वासना पैदा करके फकीर चन्द ने स्थूल रूप को बनाया था। अब लोग इस बात का प्रमाण मांगते हैं। मैंने प्रमाण तो दे दिया। अब दातादयाल के शब्द का प्रमाण देता हूं :—

साधो यह मन समझन योग॥
मन ही ज्ञान और मन ही ध्यान है, मन ही मोक्ष और भोग।
मन में वेद को पढ़ते ब्रह्मा, शंकर करते योग॥
मन ही अन्दर सृष्टि व्यापी, मन ही में है रोग।
मन गोविन्द मन गोरख रूपा, मन ही योग वियोग॥
मन ही पानी मन ही अगिनी है, मन ही आनन्द सोग।
मन ही गुरु है मन ही चेला, मन ही ब्रह्म संजोग॥
मन ही का व्यवहार जगत में, नाहीं जाने लोग॥

दातादयाल का शब्द इस बात का प्रमाण है कि त्रिकुटी का स्थान या दूसरा स्थान तुम्हारे मन का हैं, सूक्ष्म प्रकृति का है और उसका गुण आस है। वहीं से ही ब्रह्मा सृष्टि रचता है योग वशिष्ट

को पढ़ो। वहीं से आकर देवता इस शरीर में जन्म लेते हैं। वह देवता कौन हैं? वह ऊपर की त्रिकुटी है, मन है, गुरु है। गुरु का स्थान है। वहां से आकर जन्म लेते हैं और हमारे अन्तर में हमारी आस के जो अणु हैं वह अपने ही संकल्प से स्थूल सृष्टि को रचते हैं जिस तरह कि यादराम ने या देवास वाले लड़के ने या ओ३मप्रकाश धर्मशाला वाले ने अपनी आस से मेरे रूप को बनाया। यह त्रिकुटी या स्थान गुरु का स्थान है। गुरु कौन है? गुरु है तुम्हारा अपना ही मन। स्वामी जी कहते हैं :—

अब चलो सजनी दूसर धाम।
निरखो त्रिकुटी गुरु का ठाम॥
ओंकार धुन जहां बिसराम।
गरजें बादल और घनश्याम॥
सूरज मंडल लाल मुकाम।
गुरु ने बताया गुरु का नाम॥

गुरु ने बताया गुरु का नाम—गुरु का नाम फिर क्या है? बाहर के गुरु ने उस गुरू का नाम बताया। वह है तुम्हारे मन का स्थान। जिस तरह बाहर में इलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स स्थूल माद्दा या पदार्थ को पैदा करते हैं इसी तरह इस स्थान से मन के अन्तर से सूक्ष्म प्रकृति की धारें निकलती रहती हैं। जब बह इकट्ठी हो जाती हैं तो जिस तरह इस दुनिया में समुद्र के पानी के अबखरात इकट्ठे होकर ऊपर जाकर और बादल बनकर गरजते हैं इसी तरह से इस मन की धारें इकट्ठी होकर बादल की तरह या मृदंग की तरह, कोई इसे बम-बम कह देता है, कोई ओ३म् ओ३म् कह देता है, मुसलमान इसको अल्लाहू कह देते हैं, गरज पैदा करती है। मन के इकट्ठा होने के कारण यह बादल की गरज का शब्द होता है। मैं ऊँचा चला गया हूं। मुझे इन स्थानों से कोई प्रयोजन नहीं रहा। क्यों? क्योंकि मुझे यह ज्ञान हो गया कि मेरा रूप लोगों के अन्तर

जाता है और मैं नहीं होता। इस ज्ञान से वह जो त्रिकुटी का आकर्षण था और मैं उस स्थान को देखने की इच्छा किया करता था वह समाप्त हो गया, अब मेरा साधन मन के ऊपर चला गया, आत्मा के ऊपर चला गया और परमात्मा से ऊपर चला गया तथा ब्रह्माण्डों से ऊपर चला गया। चूँकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा इसलिये कहता हूं कि इस स्थान तक जाने के लिये मन को इकट्ठा करके और उसके खेलों को देखने के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य केवल किसी विशेष गुरु का ही ध्यान करे यह तो अज्ञानी जीव को विश्वास दिलाने के लिये और मन को इकट्ठा करने के लिये रूप का ध्यान बताया जाता है। असली रूप का ज्ञान जो तुम्हारा मन है। शुरू में चाहे राम के रूप में पचे चाहे कृष्ण के रूप से, चाहे देवी के रूप से, या है फकीर दातादयाल या और किसी रूप से पहुंचो। इस अज्ञान के होने के कारण यह जितने धर्म सम्प्रदाय वाले हैं यह अपने-अपने गुरुओं की प्रशंसा करते हैं कि हमको बाबा फकीर ले गया, बाबा साबनसिंह ले गये या राम कृष्ण ले गये। ऐ भारत के धार्मिक जगत के लोगो! इस अज्ञान ने तुमको पक्षपाती बना दिया। तुम किसी का रूप ध्यान करके जिससे प्रेम हो, तुम अपने अन्तर में त्रिकुटी की अवस्था पैदा करके अपने मन को इकट्ठा करके जो तुम्हारी सूक्ष्म प्रकृतियों के ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं उनको इकट्ठा करके अपने अन्तर उस धुन को सुन सकते हो जिसका नाम ओंकार है, ओ३म् है। उस ओ३म से ही रचना होती है। चूँकि तुम्हारी वृत्तियां इकट्ठी हो जाती हैं उसके इकट्ठा होने के कारण उसमें प्रकाश पैदा होता है। चूँकि मन की वृति का इकट्ठा होने के कारण जोर लगता है इसलिये लाल रंग का सूर्य और लाल रंग का प्रकाश दिखाई आता है। तब ही तो मैं कहता हूं कि हर सम्प्रदाय और पंथ वालों ने अपनी वाणी को रोचक बनाया ताकि लोग उसकी ओर खिंच जावें और उसी धर्म पथ के

अनुयायी बन जावें। राधास्वामी मत में यदि कोई बड़प्पन है तो उस गुरु का नहीं है जिसका रूप तुम्हारे अन्तर में प्रगट होता है। वह तो तुम्हारा अपना ही मन है। यदि बड़प्पन है तो उस बाहर के गुरु का है जो उस स्थान का पता देता है। यही इस वाणी में लिखा है :—

सूरज मंडल लाल मुकाम।
गुरु ने बताया गुरु का नाम ।।

इसलिये राधास्वामी मत में बार बार कहा जाता है कि पूर्ण गुरु की खोज करो जो तुमको भेद और असलियत बतादे। यही एक भेद था जो हुजुर महाराज को मिला था। यहां गुरु का स्थान है। सतगुरु इससे आगे रहता है। गुरु तुम्हारे मन का स्थान है। तुम्हारे मन का रूप है। मैंने ऐसा समझा है।

पंचम वेद नाम यह गायो।
चहुं दल कंवल संत बतलाया ।।

पंचम वेद किसे कहते हैं ? यह तो स्वामीजी को ज्ञात होगा कि उनका इससे क्या भाव है। मैंने यह समझा है कि वेद नाम है ज्ञान का। वेद चार हैं—ऋगवेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद। इनमें ज्ञान ही भरा हुआ है। तो जिस स्थान से यह ज्ञान निकलता है वह स्थान है तुम्हारे मन की एकाग्रता का नाम। जिस नुक्ते से यह ज्ञान पैदा होता है उसका नाम मेरी समझ में पंचम वेद है। आगे कहते हैं—

घंटा शंख तजी धुनि दोई।
गरज मृदंग सुनाई सोई ।।

जो पहिले स्थान या विराट पुरुष का शब्द था वह अब छूट गया और अव्याकृत का देश आगया। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार अव्याकृत के दर्शन करने से यहां जो शब्द होता है। कोई उसे बादल की गरज से उपमा देते हैं कोई मृदंग की आवाज के समान बताते

हैं। कोई उसको बम बम कहता है। कोई उसको वाह गुरु के नाम से स्मरण करता है। वास्तव में जो तुम्हारे मन से सूक्ष्म प्रकृति की धारें निकलती है अर्थात कौसमिक किरणें जो नीचे आकर प्रकाश बनाती है जिसमें से एलैक्ट्रोन्स व प्रोटोन्स निकलते हैं यह वह स्थान है।

सुरत चली और खोला द्वार।
बंकनाल धस हो गई पार॥

अब जो वस्तु अन्तर में रहती हुई इस इलैक्ट्रोन्स व प्रोटोन्स के खेल को देखती थी स्थूल प्रकृति का और जो वस्तु मन में रहती हुई मन के खेल को देखती है, सूर्य को अपने अन्तर देखती है वह है सुरत वह है असली फकीरचन्द। उसने जा करके द्वार खोला। किसका? इस ओ३म के स्थान का। कैसे खोला? बंकनाल में धँस कर। बंक-नाल कहते हैं टेड़े रास्ते को अर्थात पहिले कुछ नीचे आना और फिर ऊपर आना। जाग्रत की जो चेतनता (Sensation) या देह का भान था उनमें गुनूदगी आजाती है, वह हट जाते हैं। गुनूदगी आने का अर्थ यह है कि वह नीचे आती है और फिर गुनूदगी को छोड़ कर या बेहोशी को छोड़कर फिर वह मन की चेतनता में चली जाती है। नीचे जाना और फिर ऊपर आना। उस अवस्था का नाम है बँकनाल। जैसे रात को तुम सोने लगते हो। तो एक बार तुमको बेहोशी आती है। जाग्रत और स्वप्न के बीच एक बेहोशी आती है, गुनूदगी आती है। उसके बाद तुम्हारा मन जो है वह अपना खेल स्वप्नावस्था में करता है। यह स्थान तुम्हारी आस का है, तुम्हारे विश्वास का है। जैसी तुम्हारी आस होगी वैसी ही रचना इस त्रिकुटी में बनाओगे। फिर स्थूल शरीर पर वैसा ही प्रभाव होगा, इसका प्रमाण? समाचार पत्रों में कुछ समय पहले पढ़ा था कि विलायत में डाक्टरों ने विचारों की शक्ति के परीक्षण किये हैं। उन्होंने दो कमरे लिये। उनमें से एक कमरे को बिल्कुल कीटाणु

रहित कर दिया और दूसरे कमरे में हैजा, प्लेग, टी० बी० या और किसी तरह के कीटाणु भर दिये। दो कैदियों को बुलाया जिनको मृत्यु की या और कोई सजा दी थी। यह दोनों कैदी विचार की शक्ति के परीक्षण के लिये बुलाये गये थे।

जो कीटाणु रहित कमरा था उसमें एक कैदी को रखकर उससे कहा गया कि यह कमरा विभिन्न प्रकार के खतरनाक कीटाणुओं से भरा हुआ है तुम यहां रहो, तुमको यह सजा है। दूसरे कमरे में जो खतरनाक कीटाणुओं से भरा हुआ था दूसरे कैदी को रक्खा। उससे कहा गया कि यह कमरा कीटाणुओं से रहित है। दोनों को यह विचार दे दिये गये। रात बीतने पर जब सुबह को देखा तो वह कैदी कीटाणु रहित कमरे में था वह मरा हुआ था क्योंकि उसको यह ख्याल दिया गया था कि उस कमरे में कई प्रकार के खतरनाक कीटाणु हैं। दूसरा कैदी जो कीटाणुओं से भरपूर था वह बिल्कुल स्वस्थ था क्योंकि उसको ख्याल दिया गया था कि यह कमरा बिल्कुल स्वच्छ है। यह साइंस का प्रमाण है कि त्रिकुटी के स्थान पर अर्थात तुम्हारे मन के अन्तर जिस प्रकार की आस होती है, जिस प्रकार का ख्याल होगा उसके अनुसार मन की कौसनिक किरणें प्रकाश बनाकर उसमें से एलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स बनायेंगी। क्या यह प्रमाण नहीं हैं कि मन के अन्तर में जिस प्रकार का विचार तुम्हारा होता है वही विचार स्थूलरूप धार लेता है। इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि ऐ मानव जाति ! तुम्हारे जीवन में जो कुछ तुमको मिलता है वह इस त्रिकुटी के स्थान से ही मिलता है। जैसा तुम्हारा विचार है, जैसी तुम्हारी आस है जैसा तुम्हरा विश्वास है उसके अनुसार तुम्हारे ख्याल का प्रभाव है। यदि प्रबल है तो वह जो एलैक्ट्रोन्स और प्रोटोन्स जो स्थूल पदार्थ बनाते हैं वह तुम्हारी आस के अनुसार बनायेंगे जो तुमने उस दूसरे स्थान से निकाले हैं। मुझे दातादयाल कहा करते थे कि जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी मति

वैसी गति, जैसी करनी वैसी भरनी। इसलिये हिन्दू शास्त्रों ने शुभ संकल्पमस्तु का ख्याल जीवों को दिया था। मन कर्म से आशावादी बने रहो। अपने आपको शोधो और पवित्र रक्खो। यह दूसरा स्थान है। मुझ पर गुरु ऋण था। मेरा अपना कर्म था। मैंने ८३ वर्ष इसी खब्त में खो दिये। मेरी समझ में यह बात आई है। यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं वही ठीक है। वही बात स्वामी जी कहते हैं, वही शास्त्र कहते हैं और वही साइंस सिद्ध करती है। इसलिये मानव जाति अपना कल्याण चाहती है तो चाहिये कि इस ओंकार के स्थान पर ठहरे उसकी आशाओं को जैसी जैसी जिसकी आशा है यह ओंकार का स्थान उसकी सहायता करेगा। यदि कोई अपने घर जाना चाहता है तो उसकी सहायता भी यह ओंकार का स्थान करेगा यदि कोई दुनियां की उन्नति चाहता है तो उसकी सहायता भी यह ओंकार का स्थान करेगा।

इसलिये हिन्दू शास्त्रों ने ओ३म को बड़ा भारी महत्व दिया है। हर जगह ओ३म की महिमा है। ओ३म भूः, ओ३म भुवः, ओ३म महः ओ३म जनः ओ३म तपः ओ३म सत्यम्। ओ३म की महिमा क्यों है? क्योंकि यह कुञ्जी है। किसकी? दुनिया में जीवन बनाने की और असली घर आध्यात्मिक मंजिलों में जाने की। यह मेरा अनुभव है। इसलिये ओ३म की महिमा है। दुनियां केवल ओ३म ओ३म करना जानती है। दुनियाँ को ओ३म के अर्थ ज्ञात नही हैं। जिस आस और श्रद्धा को लेकर तथा जिस वासना को लेकर तुम अपने अन्तर में विराट पुरुष को छोड़कर अव्याकृत अर्थात त्रिकुटी के रूप में आकर ओंकार के स्थान पर जाओगे तो तुम्हारी उस आस के अनुसार तुम्हारा जीवन बनेगा। यह है जो मेरी समझ में आया है।

—०—

क्रमशः (शेष अगले अंक में)

महर्षि शिवव्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकें

आध्यात्मिक पुस्तकें

सम्पूर्ण महारामायण	१०)
श्री मद्भगवद्गीता भाग १	१)५०
,, भाग २	१)५०
नानक योग ३ भाग	४)
राधास्वामी योग ६ भाग	८)
कबीर योग प्रथम भाग	२)५०
,, द्वितीय भाग	२)७५
,, तृतीय भाग	१)७५
कबीर आद्य ज्ञान प्रकाश	३)
शरणागति योग	)७५
उपासना योग	१)
कर्म रहस्य	१)
आनन्द योग प्रकाश	२)५०
Light on Anand yog	३)
पंथ संदेश	३)
सहज भक्ति	१)
आत्मिक प्रायमर	१)
दयाल योग (उर्दू)	२)५०

उच्चकोटि के उपन्यास

शाही भूत	१)५०
शाही डाकू	३)७५
शाही लकड़हारा सजिल्द	४)६२
शाही भिखारी	३)५०
शाही जादूगरनी	२)५०
आबदार मोती	२)५०
ताबदार मोती	२)५०
झलकदार मोती	३)
गिरहदार मोती	१)२५
रंगदार मोती	२)५०
दलदार मोती	३)७५
कजदार मोती	३)
चमकदार मोती	२)५०
हिसक मोती	२)५०
ओ३म नाविल	३)
शाही भक्तिनी	२)५०
शिवजी की अद्भुत कहानी	१)५०
सिंध देश की कहानियाँ	१)२५

पाठ तथा गाने के शब्द

शिव शब्द सागर सजिल्द भाग १ व २	७) ७)
फकीर भजनावली	१)५०
शब्द गुंजार भाग १, २, ३,	५)
शब्दों का गुटका	)६०
नन्दू भाई की साखी	१)५०
पिंगल साखी	१)
सन्त कबीर की साखी	३)
कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१)५०
कबीर शब्दावली	२)२५
नैय्यरे आजम	१)५०
रहिमन नीति दोहावली	)७५
सन्त शब्दावली	१)५०

Regd No. L-ALG-28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

शिव साहित्य प्रकाशन मंडल

या

सम्पादक मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं०

श्री

सम्पादक— प्रभुदयाल मीतल
व्यवस्थापक व प्रकाशिका,
श्रीमती मीतल,
शिव भवन, लेखराजनगर

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh